मनोज
कॉमिक्स
संख्या 706 मूल्य 7.00
ड्राक्यूला की वापसी
राम-रहीम

ड्रैकुला की वापसी

ड्रैकुला की वापसी

लेखक : संदीप-सावन · चित्रांकन : कदम स्टुडियो

डबल सीक्रेट एजेण्ट 00½ राम-रहीम सीरीज

इंस्पेक्टर और हवलदार ने जग्गा का पीछा किया।
मैं कहता हूं, रुक जाओ जग्गा। तुम बच नहीं सकते।

फिर जग्गा को न रुकते देख—
धांय

अगर मैं उन खंडहरों में पहुंच जाऊं तो मेरी जान बच सकती है।
मूर्ख, तू मेरे हाथों से बचकर नहीं जा सकता।
???

अगले पल इंस्पेक्टर ने जग्गा की टांग का निशाना साधा और—
धांय

आह!

मगर गोली लगने के बावजूद भी जग्गा भागता रहा।
फिक्र, रामसिंह! वह घायल हो चुका है। अब वह ज्यादा दूर नहीं भाग सकेगा।

जैसे ही जग्गा खंडहरों में प्रविष्ट हुआ।
!!!

कुछ देर बाद खंडहर के भीतर —
रामसिंह! तुम उस तरफ देखो, मैं इस तरफ देखता हूं!
ओ.के. सर!

फिर दोनों जग्गा को खोजने के लिये विपरीत दिशाओं में बढ़ गये।

थोड़ी देर बाद —
कमाल है! उसे जमीन खा गई या...!

तभी —
आह! बचाओ...!
अरे! यह तो हवलदार रामसिंह की आवाज है, लेकिन उसे क्या हुआ है...

...ओह!
कहीं जम्मा ने
उस पर हमला तो नहीं
कर दिया है? जरूर
यही बात होगी!
बचाओऽऽ

ही...ही...ही!
अगर मैंने तुझे छोड़ दिया
तो मेरी बरसों की खून की प्यास
कैसे बुझेगी? ही...ही...ही!

नहींऽऽऽ!
आहा! खून... खून!

और अगले पल—
ई...ई...ई...!
सुप... सुप...

शीघ्र ही हवलदार रामसिंह की आँखें मुंद गईं।
चप... चप... चप...

तभी आंधी-तूफान की तरह इंस्पेक्टर वहां पहुंचा।
रामसिंह की आवाज इधर से ही आई थी।

फिर उस कमरे में घुसते ही—
हे भगवान! यह जग्गा तो हरगिज नहीं हो सकता। यह तो कोई पिशाच मालूम पड़ता है, मगर जग्गा अचानक पिशाच कैसे बन गया?

अगले ही पल उसने अपने आपको संभाला और—
धांय
धांय
धांय
हा...हा...हा! एक शिकार और...हा...हा...हा...!

ओ माई गॉड! इस पर तो गोलियों का कोई प्रभाव ही नहीं पड़ रहा है। आखिर यह...!
धांय

तभी जग्गा भयानक अंदाज में इंस्पेक्टर की ओर बढ़ा।
हा...हा...हा! मैं जग्गा नहीं बल्कि ड्राक्युला बालक हूं इंस्पेक्टर। अब तुम्हारे मुजरिम जग्गा के शरीर पर मेरा कब्जा है। अब तुम्हारा भी खून पीकर वर्षों बाद मेरी खून पीने की प्यास अच्छी तरह बुझेगी।
हैं! ड्राक्युला बालक!

उफ! अब तो
यहां से भाग निकलने
में ही भलाई है।

हा...हा...हा!
मेरा शिकार मुझसे बच
नहीं सकता।
हा...हा...हा!

धड़ाक
आह!

हा...हा...हा...!
अब प्यास के साथ-साथ
मेरी भूख भी मिट
जाएगी।

चपर...चपर...

कुछ देर बाद —
हा... हा... हा ! आज बहुत दिनों बाद मुझे इस भूतमहल से मुक्ति मिली है
चलते-चलते एकाएक उसकी आंखों से चिंगारियां-सी फूटने लगीं।
अब जब तक शहर जाकर मैं अपने दुश्मन राम-रहीम का खून नहीं पी लूंगा, मुझे चैन नहीं मिलेगा।
उधर उसी रात पास ही की एक सड़क पर —
… भइया ! मैंने तुम्हें कितनी बार मना किया था कि इस पिकनिक पर मत चलो, पर तुम माने ही नहीं।
अब चुप भी रहो यार ! कॉलेज के ढेर सारे स्टूडेंट पिकनिक पर आते थे, अगर हम भी आ गये तो कौन सा तूफान मच गया। अब तुम ही बताओ, अगर बस का पहिया दो बार पंक्चर नहीं हो जाता तो क्या हम समय पर घर नहीं पहुंच जाते ?
मुझे तो लगता है, यह खटारा बस आज सब हमारी खाट खड़ी और बिस्तर गोल करके छोड़ेगी।

हाय रे! टूट गये दांत।
उफ़!

अब क्या हुआ ड्राइवर? बस क्यों रोक दी?

रेडियेटर गर्म हो गया है, पानी डालना होगा।
पानी डालना होगा? लेकिन भाई, इस जंगल में पानी कहां मिलेगा?
पानी का इंतजाम तो करना ही होगा, वरना सबको सारी रात यहीं काटनी होगी।

राम भइया! अब तुम ही कुछ करो, वरना हम सबको आज की रात यहीं कुढ़-कुढ़कर मरना होगा।

ठीक है। आओ रहीम, कहीं से पानी का इंतजाम करके लाते हैं।

लेकिन राम भइया, इस सुनसान जंगल में पानी कहां मिलेगा?

जीप से नीचे उतरकर राम ने टॉर्च जला ली थी।

यहां पास ही कुछ दूरी पर भूतमहल है। मुझे अच्छी तरह याद है, वहां कभी एक छोटी सी झील हुआ करती थी। हम वहीं से पानी लायेंगे।

क्या? भूतमहल?

क्यों, क्या हुआ?

कुछ नहीं राम भइया। तुमने भूतमहल का नाम लिया तो मुझे *भूतमहल वाले केस की याद ताजा हो आई। कितना खतरनाक था वह केस। अगर प्रोफेसर दिवाकर हमें न बचाते...

...तो शायद प्रोफेसर शैतान और ड्रक्युला बालक ने हम सबको खत्म कर दिया होता। अब भी...

...कभी-कभी मैं सोचता हूं कि ...ड्रक्युला बालक कभी फिर से जीवित...

यार! कभी तो अक्ल से अच्छी बातें भी सोच लिया करो। तुम तो हर समय उल्टी सीधी बातें ही सोचते रहते हो।

* भूतमहल वाले केस के बारे में जानने के लिये राम-रहीम के शानदार कॉमिक्स 'भूतमहल व ड्रक्युला बालक' पढ़ें।

अरे! राम भइया, वो देखो।
अरे! जीप और मोटरसाइकिल।

दोनों लपककर उस स्थान पर पहुंचे।
रहीम! ये जीप तो पुलिस की है, मगर यह यहां लावारिस कैसे पड़ी है?
और देखो, इस मोटरसाइकिल का टायर बर्स्ट है।

लगता है, पुलिस और मुजरिम के

रहीम! वह देखो, कुछ कदमों के निशान भूतमहल की ओर जा रहे हैं...

उफ़! कितना भयानक है यह महल। बिल्कुल पहले जैसा भुतिया।

अगले ही पल—
रहीम ! भागो ! हमारे साथियों के प्राण खतरे में हैं !

सड़क पर पहुँच राम ने कुछ सोचा और पुलिस जीप पर सवार हो गया।
हरिअप रहीम !

और फिर रहीम के सवार होते ही राम ने जीप को बस की दिशा में दौड़ा दिया।

उधर—
कमाल है ! आधा घंटा गुजर गया, राम-रहीम अभी तक वापस नहीं लौटे।
बस आते ही होंगे।

तभी उन्हें पेड़ों के पीछे से किसी के तेजी
आवाजें सुनाई दीं।
ओह, राम-रहीम आ गये हैं।

लेकिन अगले ही पल—
आ...ई
ओह ! भूत !
गुर्र...गुर्र...गुर्र...
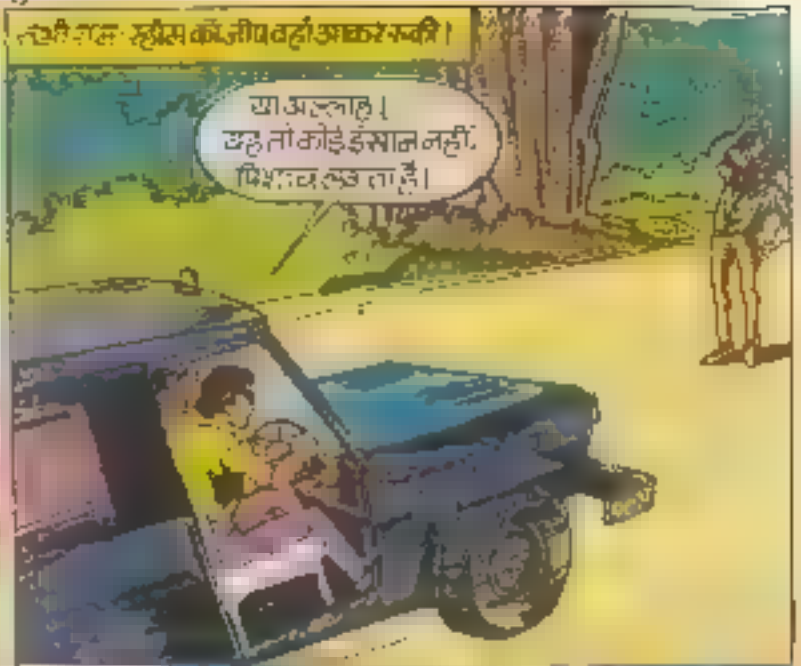
ओह! लेकिन अब क्या होगा? वह तो कुछ ही देर बाद शहर पहुंच जायेगा।
हमें भी तुरंत शहर पहुंचना होगा। आओ, जीप को सीधा करें।
ईश्वर करे जीप का इंजन और कलपुर्जे ठीक-ठाक हों, वरना मुश्किल हो जाएगी।
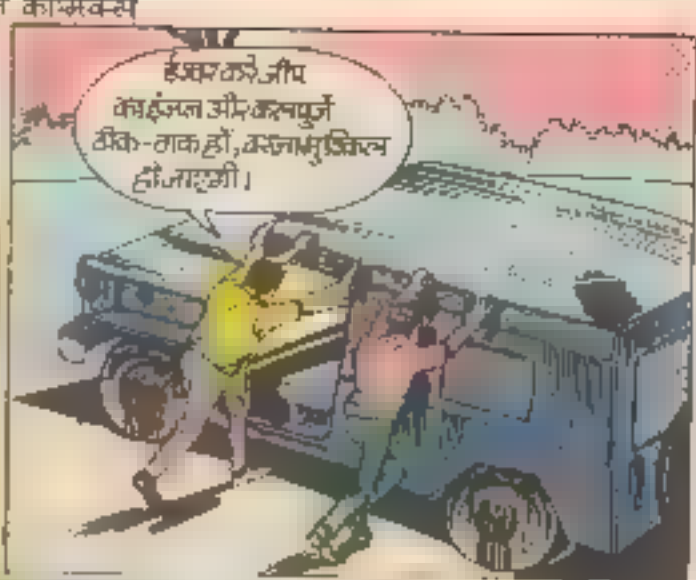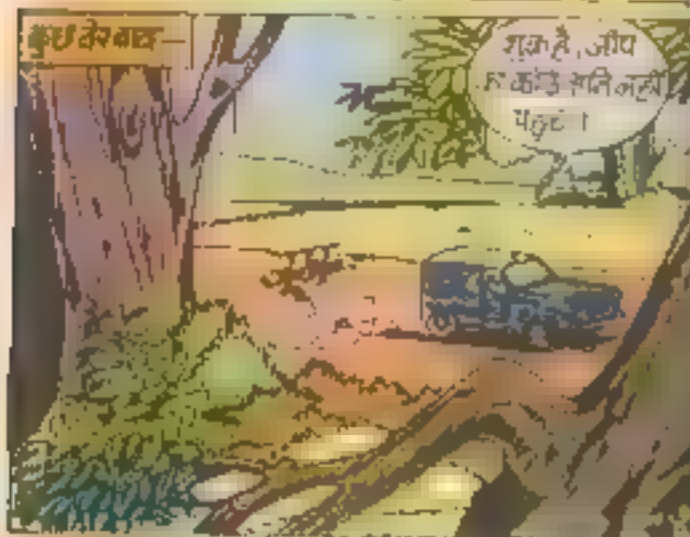
कुछ देर बाद—
शुक्र है, जीप में कोई खराबी नहीं पड़ी।
हां, सामने एक पोस्ट ऑफिस है। हम वहां से शहर टेलीफोन करके यहां की और भूत महल की घटना के साथ-साथ ड्राक्युला के बारे में पुलिस को सारी बात बता देंगे, ताकि वे इस संबंध में जो कुछ भी करना है, जल्दी से जल्दी कर सकें।
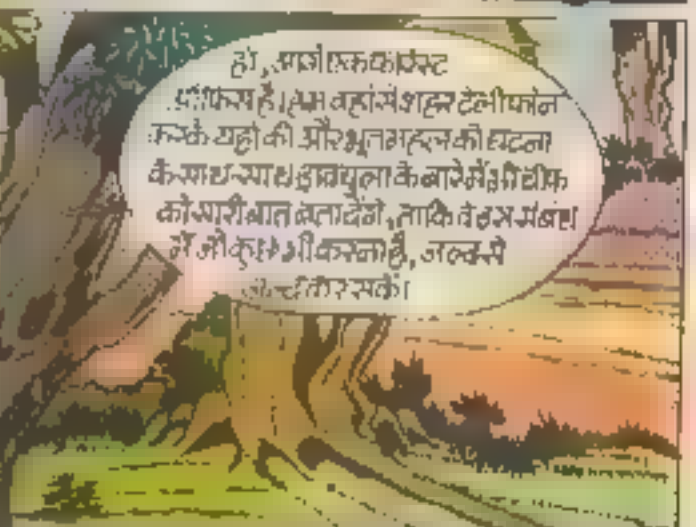
जल्दी ही—
व्हाट? ड्राक्युला वाला फिर जीवित हो उठा है।
यस चीफ। और वह कुछ ही देर में कार नम्बर डी बी पी 167 द्वारा शहर में प्रवेश करने वाला है...

...आप तुरंत ही उसे पकड़ने का प्रबंध कीजिए, वरना अनर्थ हो जाएगा।
ओह!

फिर राम से संबंध विच्छेद करने के पश्चात् चीफ मुखर्जी ने किसी अधिकारी से फोन पर संपर्क किया और उसे आवश्यक हिदायत देने लगे।
यस...यस! शहर की जंगल वाली सीमा पर सुरक्षा व्यवस्था कड़ी कर दो। बस नम्बर डी.बी.पी. 67 के ड्राइवर को देखते ही गोली मार दो...

और सुनो, शहर में सभी लोगों
घुसने वाला है। कोई घर से बाहर न
ओ.के. सर!

कुछ ही देर में —
शहर में एक भयानक शैतान जो कि ड्राक्युला बालक है, प्रवेश करने आ रहा है। अतः आप सबसे निवेदन है कि आप अपने घरों से बाहर न निकलें..
?
!!

...और अपने घरों के खिड़की-दरवाजे अच्छी तरह बंद रखें। धन्यवाद।
!!

ड्राक्युला बालक के पुनः जीवित होने की खबर सुनकर पूरे शहर में हंगामा मच गया।
भागो-भागो! ड्राक्युला बालक आ रहा है।

हे भगवान! यह क्या हुआ? ड्राक्युला बालक की आत्मा किसी इंसान के शरीर में प्रविष्ट हो गई। अब क्या होगा?

ओ गॉड। प्लीज हेल्प अस।

या अल्लाह! इतने साल बाद वह शैतान कहां से आ गया?

जबकि शहर में व्याप्त भय से कुछ बदमाश इस स्थिति से फायदा उठाने की योजना बना रहे थे।

बॉस! यह ड्राक्युला हमारे लिए बहुत फायदेमंद साबित हो सकता है।

एकदम ठीक कह रहे हो बॉस! अगर वह एक बार हमारे हाथ आ गया तो दिल्ली के जौहरी बाजार को लूटने का आपका बरसों पुराना सपना पूरा हो जाएगा।

ठीक है। तुम दोनों जाओ और ड्राक्युला का पता करके उसका पीछा करो। और मौका मिलते ही उसे किडनैप करके दिल्ली वाले अड्डे पर ले आओ।

ओ. के. बॉस!

उधर राजपथ बॉर्डर पर —

सब अलर्ट में तैयार रहो। ड्राक्युला किसी भी समय यहां पहुंच सकता है।

इंस्पेक्टर बाकराम-रहीम चीफ मुखर्जी की कोठी में थे
यस चीफ! ड्राक्युला को समाप्त करने के लिए हमें प्रोफेसर दिवाकर को खोजना ही होगा।
लेकिन प्रोफेसर दिवाकर ही क्यों? क्या किसी अन्य वैज्ञानिक से काम नहीं चल सकता?
नो सर। ड्राक्युला बालक को डॉक्टर शैतान ने तैयार किया था। और डॉक्टर शैतान को सारी वैज्ञानिक विद्या प्रोफेसर दिवाकर ने ही सिखाई थी, इसलिए सिर्फ वे ही जानते होंगे कि ड्राक्युला बालक को कैसे समाप्त किया जा सकता है?
ओह! लेकिन मेरी समझ में यह नहीं आया कि आज जब डॉक्टर शैतान जीवित नहीं है; तो फिर उस ड्राक्युला को किसने और कैसे जीवित कर दिया?
चीफ! बस यही एक ऐसा रहस्य है, जो अभी तक हमारी भी समझ में नहीं आया है...
...परन्तु मुझे पूरा विश्वास है कि प्रोफेसर दिवाकर के मिलने के बाद हम सारा रहस्य समझ सकते हैं।
ठीक है। मैं अभी प्रोफेसर दिवाकर की खोज शुरू करवाता हूँ...
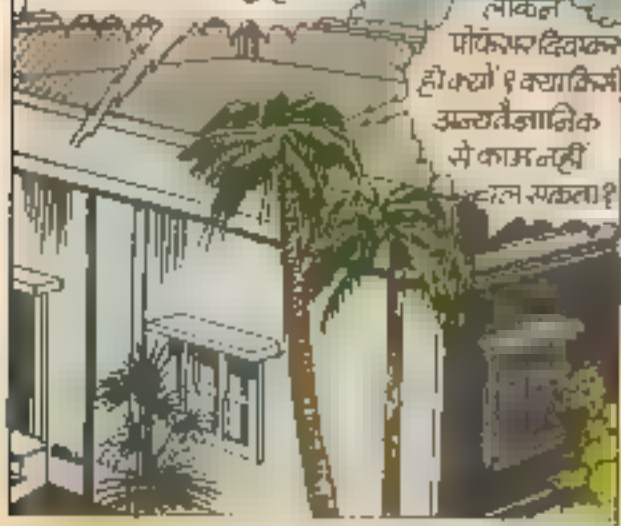
...जैसे ही मुझे कुछ पता चलेगा, मैं तुम्हें सूचित करूंगा। वैसे मैंने तीनों घटना स्थलों पर पुलिस फोर्स को रवाना करवा दिया है।
यह आपने अच्छा किया चीफ। अब हम चलते हैं। आजकल मम्मी-डैडी शहर से बाहर गये हुए हैं, इसलिए हम यहां से सीधे ड्राक्युला बालक की खोज में ही निकलेंगे।
फिर राम-रहीम एक टैक्सी पकड़कर बाकी की सारी रात ड्राक्युला की खोज में शहर का चक्कर लगाते रहे।
और अंत में हताश हो अपने कक्ष में आकर सो गये।
सुबह —
ट्रिन... ट्रिन...
ओह! शायद चीफ का फोन है।

हैलो! राम स्पीकिंग।
राम! मैं चीफ बोल रहा हूँ।

ओह! गुडमार्निंग चीफ। कहिए, कैसे याद किया?

प्रोफेसर दिवाकर के बारे में कुछ जानकारी मिली है। सुनो...।
फिर चीफ उधर से राम को कुछ बताने लगे।

सब कुछ सुनने के बाद —
ओ. के. चीफ! मुझे उम्मीद है कि अब हम ड्रैक्युला को खत्म कर सकते हैं।

राम फोन रखकर जैसे ही पलटा —
किसका फोन था राम भइया?
चीफ अंकल का। अब जल्दी से तैयार हो जाओ, हमें नौ बजे की ट्रेन से दिल्ली के लिए रवाना होना है।
दिल्ली जाना है, मगर क्यों?

प्रोफेसर दिवाकर का पता मिल गया है। वे दिल्ली में हैं।
सच?

हां, प्रोफेसर दिवाकर इस समय अपने एक शिष्य के महरौली स्थित फार्म हाउस पर ठहरे हुए हैं।

ओह! समझा! मैं अभी तैयार होता हूं।

तभी--
तुम दिल्ली कभी नहीं पहुंच पाओगे।
क...कौन?
हैं!

दोनों तेजी से पीछे पलटे।
ओह! ड्राक्युला!

हा...हा...हा! तुम दोनों क्या समझते थे, मैं तुम्हारा खून पिये बिना ही आसानी से तुम्हारा पीछा छोड़ दूंगा?

त...तुम यहां कैसे पहुंच गये?

ड्राक्युला ने झपटकर रहीम की गरदन थाम ली।
हा... हा... हा! आत्मा को कहीं भी आने-जाने से कोई नहीं रोक सकता। अब तुम दिल्ली नहीं यमपुरी जाओगे।
आह...

...राम! बचाओ!
उफ! अगर मैंने जल्द ही कुछ नहीं किया, तो यह रहीम को मार डालेगा।

फिलहाल इस कुर्सी से काम चलाऊं।

अगले ही पल—
धड़ाक
आह!

और इससे पहले कि ड्राक्युला संभल पाता—
धड़ाक
आह!

धम्म
उफ!

भागो।

फिर दोनों ने खिड़की से बाहर छलांग लगा दी।
छनाक
छनाक

सीधे रेलवे स्टेशन की तरफ भागो। ट्रेन छूटने में अब कुछ मिनट ही शेष रह गये हैं।

अगर ये दोनों प्रोफेसर दिवाकर के पास पहुंचने में सफल हो गये तो फिर मुझे इस शरीर के साथ नष्ट होने से कोई नहीं बचा पायेगा और मेरा बदला अधूरा रह जायेगा।

तुम ठीक कहते हो रहीम, लेकिन फिलहाल तो उससे हमारा पीछा छूट ही गया है।

- क्या राजधानी एक्सप्रेस दिल्ली पहुंच सकी?
- क्या राम-रहीम ड्राक्युला के खूनी पंजे से बच सके?
- अपराधियों के उस गिरोह का क्या हुआ, जो ड्राक्युला का अपहरण करना चाहता था?
- क्या राम-रहीम प्रोफेसर दिवाकर से मिल सके?
- आखिर ड्राक्युला की वापसी कैसे हुई थी?
- क्या राम-रहीम ड्राक्युला को समाप्त कर सके?
- ऐसे व अन्य ढेर सारे प्रश्नों के उत्तर जानने के लिए 'मनोज कॉमिक्स' में इस रोमांचकारी कथा का अगला भाग पढ़ें — 'ड्राक्युला दिल्ली में'।

ड्राक्युला दिल्ली में